कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय ....हिन्दी....

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक | | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

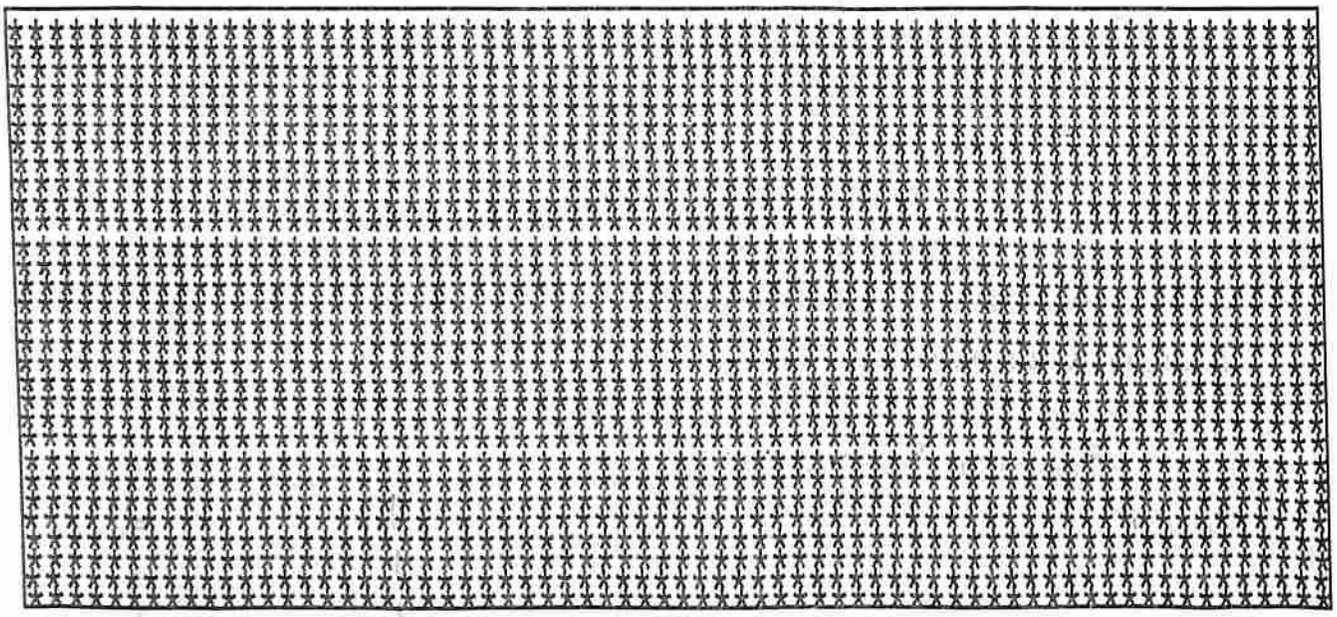

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड → I

1 उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक → समाज सुधारक कबीर

2 कबीर के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि उनका व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

3 कबीर धर्म के विषय में निर्गुण काव्यधारा के थे। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले बाह्याडंबर, भेदभाव और साम्प्रदायिकता आदि का उन्होंने पुष्ट-अप्रमाण लेकर दृढ़ विरोध किया है। उन्होंने कर्मकाण्ड व मूर्तिपूजा का विरोध किया।

पंद्याश →

4 भारतवासियों के प्रति कवि इसलिए आक्रोशित है क्योंकि भारतवासी गुलामी के बंधन में जकड़े हुए सुप्त हो चुके हैं, उनके भीतर देश को परतंत्रता के बंधन से मुक्त कराने के प्रति आक्रोश नहीं है।

5 जिस स्थान पर वीरता नहीं होती, वहां पुण्य का क्षय व स्वार्थ का उदय होता है।

6 धर्म के पालनहेतु हाथ में तलवार धारण कर देश की रक्षा के लिए उद्यत तत्पर हो उठे वह धर्म की स्थापना के लिए दृढ़ संकल्पित होकर अधर्म का नाश करने के लिए तत्पर हो उठे तभी धर्म की रक्षा तथा पालना होगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7	

खण्ड -2

राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी

(i) प्रस्तावना व स्वरूप →

भारत देश युवाओं का देश है, भारत की संस्कृति व परम्परा प्राचीनकाल से ही गौरवशाली रही है। भारत देश में सदा ही नारी को देवी का स्थान दिया जाता रहा है। भारत में समाज के हर पहलू में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो तो, भारत एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होगा। महिलाएँ भारत की 50% आबादी है इनका योगदान देश को विकास के शिखर की ओर बढ़ाएगा। भारत में प्राचीनकाल में भी महिलाओं को गौरवमयी व समृद्धता का प्रतीक माना जाता था।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता"

(ii) राष्ट्र विकास में महिला भागीदारी की आवश्यकता →

भारत युवाओं का देश है तथा प्रगतिशील राष्ट्र है जो विकासशील देश से विकसित देश होने की राह में है। इस स्थिति युवाओं को चाहिए कि वे देश के विकास में योगदान दें। भारत देश में 50% महिला आबादी है इसलिए यदि महिलाएँ देश के विकास में योगदान दें तो भारत की विकासशीलता में तीव्र वृद्धि होगी। यदि हम महिला को शिक्षित

करते हैं तो महिला एक अकेले तीन पीढ़ियों में सुधार का कारण बनती है तो अगर हम देश की महिलाओं से देश के विकास में योगदान करने की बात कहे तो उनके देश के लिए योगदान से देश की उद्यमिता में तीव्र बढ़ोतरी होगी। और भारत पुनः विश्वगुरु कहलाएगा।

"यदि हमको बनना विश्व की शान
तो हमें करना होगा नारी का सम्मान"

(iii) कामकाजी महिलाओं की समस्या व उनका समाधान →

वर्तमान में भारत में महिलाएँ घरेलू क्षेत्र से निकलकर देश के विकास के लिए अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही, देश व समाज के द्वारा भी उन्हें प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है परंतु समाज में कुछ ऐसे तत्व है जो महिलाओं से बाहर कार्य करना अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ समझते है, वे लोग समझते है कि महिलाएँ केवल घर में कामकाज करने के लिए बनी है और वे महिलाओं को बाहर कार्य करने योग्य नहीं समझते है। इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अनेक प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए प्रथम आवश्यकता है लोगों में जागरूकता लाने की। सरकार के द्वारा समय-समय पर महिलाओं के विकास व शिक्षा के लिए योजनाएँ चलाई जाती है। अब जरूरत समाज में एकता लाने की व स्त्री-पुरुष के मध्य होने वाले भेदभाव को कम करने की। अक्सर कामकाजी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

महिलाओं से यह कहा जाता है कि अगर वे कार्य बाहर जाकर करना चाहती है तो उन्हें कार्य के साथ ही गृहस्थी के कार्य करने होंगे हमे इस सोच को मिटाना होगा और एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जिसमें नारी व पुरुष दोनों की प्रधानता हो।

"नारी गौरव नारी शान
नारी का तुम करो सम्मान
नारी का जो करो सम्मान
देश नहीं विश्व में मिले पहचान"

उपसंहार →

हम सभी को नारी के विकास में योगदान करना चाहिए जिससे देश के गौरव में वृद्धि हो व नारी को उचित सम्मान मिले और सभी नारियाँ भी ऐसा देश प्राप्त कर गौरवान्वित महसूस करें।

"नारी शक्ति का हो होता सम्मान
देश का बढ़ता गौरव मान"

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8

सेवा में,
श्रीमान मुख्य अभियंता
विद्युत विभाग
जयपुर

विषय:- नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु।

महोदय,
उपरोक्त विषय में सविनय नम्र निवेदन है कि मैं लक्ष्मीनगर का निवासी ~~ब~~ ईशान्त हूँ। हमारे क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति की भयंकर समस्या है। हमारे क्षेत्र में बिना सूचना के कभी भी बिजली चली जाती है, जिससे जन जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। विद्यार्थियों की भी परीक्षाएँ नजदीक हैं, बिजली चले जाने से उनकी पढ़ाई में बाधा उत्पन्न हो रही है। कभी भी विद्युत चले जाने से उद्योग, व्यवसाय भी ठप्प हो गया है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप उपरोक्त समस्या पर ध्यान देकर हल करने का प्रयास करें। हमें आशा ही नहीं भरोसा है कि ये समस्या शीघ्र ही हल कर दी जाएगी। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय
ईशांत
लक्ष्मीनगर

दिनांक
17|03|18

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-3

9 कर्म के आधार पर क्रिया के भेद →
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं →

(i) अकर्मक क्रिया →
जिस वाक्य क्रिया के साथ कर्म न प्रयुक्त हुआ हो व क्रिया का फल कर्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे → नीलम घर पर रहती है।

(ii) सकर्मक क्रिया →
जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त हुआ हो व क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे → वसंत आम खाता है।

10 'राधा ने मिठाई खाई।'
वाक्य में कारक → कर्ता कारक
काल → भूतकाल
वाच्य → कर्मवाच्य

11 बहुब्रीहि समास →
वह समास जिसमे दोनों पद प्रधान न होकर कोई तीसरा पद प्रधान होता है, वह बहुब्रीहि समास कहलाता है। इस समास में जो, जैसा, वह आदि शब्दों का प्रयोग होता है।
उदाहरणार्थ →
नीलकंठ → नीला है कंठ जिसका वह (शिव)

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अशुद्ध वाक्य — शुद्ध वाक्य

12 (क) धोबी ने अच्छे कपड़े धोए → धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।

(ख) सुदामा पक्के कृष्ण के मित्र थे → सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

13 (क) बालू से तेल निकालना → असंभव कार्य करना

(ख) अंधे की लाठी होना → किसी का सहारा होना

14 चट मंगनी पट ब्याह → कार्य का शीघ्रता से होना या कार्य अविलम्ब होना

खण्ड → 4

15 संकेत → सीत को प्रबल - - - - - - - छिपाई कै।

संदर्भ →
प्रस्तुत पद्यांश रीतिकाल के महान कवि सेनापति द्वारा रचित 'ऋतु वर्णन' से लिया गया है।

प्रसंग →
प्रस्तुत पद्यांश में कवि सेनापति ने शीत ऋतु की भयंकरता का वर्णन एक सेना सहित आते सेनापति के समान किया है।

व्याख्या →
सेनापति शीत ऋतु की भयंकरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शीत ऋतु रूपी सेनापति ने अपनी सेना सहित प्राकृतिक प्रदेश पर आक्रमण कर दिया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आग भी भयभीत हो गई, निर्बल हो गई है। सूर्य डरकर कहीं छिप गया है। शीतलहर तीर के समान तन पर बरस रही है, गर्मी घर के किसी कोने में जाकर डर कर छिप गई है। लोग आग का आसरा नहीं छोड़ना चाहते हैं। उनकी आँखे धुएँ के कारण बहे जा रही हैं, लोग थोड़ी सी आग को भी अपने पास रखना चाहते हैं। लोग शीत ऋतु से भयभीत होकर अग्नि की शरण ले रहे हैं वे आग को अपनी छाती छिपा कर रखना चाहते हैं अर्थात उससे दूर नहीं जाना चाहते हैं।

विशेष →

(i) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा सरल व भावानुकूल है।
(ii) कवि ने मानवीकरण अलंकार का अद्भुत प्रयोग किया है।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में भयानक रस है।

16 संकेत:- एक उपवन - - - - - - - - लगता है।

संदर्भ →

प्रस्तुत गद्यांश लेखक रामधारी सिंह दिनकर की रचना 'अर्द्धनारीश्वर' से संकलित है।

प्रसंग →

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के लक्षणों को बखूबी स्पष्ट किया है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या >

लेखक ईर्ष्यालु व्यक्ति के चरित्र का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ईर्ष्यालु व्यक्ति एक उपवन को पाकर ईश्वर का उपकार न मानकर इसी बात की चिंता से ग्रस्त रहता है कि उसे इससे बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला अर्थात् वह प्राप्त वस्तु का आनंद न उठाकर जो प्राप्त नहीं हुआ उसकी चिंता में मग्न रहता है। ईर्ष्या नामक इस दोष व्यक्ति का चरित्र भयंकर होजाता है। वह अपने अभावों के विषय में निरंतर सोचकर चिंतित होता रहता है। वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश कार्यों में लग जाता है वह उन्नति का प्रयास न करके दूसरों के विनाश को अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझता है।

विशेष :-

(i) प्रस्तुत गद्यांश की भाषा सरल व भावानुकूल है।
(ii) लेखकनेमानव चरित्र की भयंकर बुराई का बखूबी चित्रण किया है।

17 पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै।
पचंड हुआं बिस वाव, रोभा घालै राजिया॥

प्रस्तुत सोरठे के माध्यम से कवि कृपाराम खिड़िया ने अपने सेवक राजाराम को संबोधित करके नीति पूर्ण बात कही है। प्रस्तुत पद्यांश मे कवि ने पारदर्शिता अपनाते हुए जिनका उपाय हमें तुरंत कर लेना चाहिए अ उनके विषय में बताया है। उन्होंने बताया है कि हमे अग्नि अर्थात आग, आमय अर्थात रोग व दुश्मन - इन तीन चीजो का उपचार शीघ्र अति शीघ्र कर लेना चाहिए न ही तो बाद में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ये तीनों चीजें प्रचण्ड होकर अत्यंत पीड़ा प्रदान करती हैं। अतः हमें इनका उपचार समय रहते शीघ्र ही कर लेना चाहिए इसी बात में हमारी दूरदर्शिता भी है। कवि कुमाराम खिड़िया ने ऐसे अनेक नीतिपूर्ण सोरठे लिखे हैं। जो मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है जिनका अनुसरण कर मानव जाति का कल्याण हो सकता है। अतः इस सोरठे के माध्यम से कवि ने समय पर कार्य करने के महत्व को भी स्पष्ट किया है।

18 लोक संत पीपा एक महान समाज सुधारक, संत व निर्गुण काव्यधारा के थे। उन्होंने समाज की उन्नति व उत्थान के लिए पूर्ण प्रयास किया। संत पीपा पहले मूर्ति पूजक व दुर्गा के उपासक थे। लेकिन बाद में गुरु रामानंद के कृपा से उन्हें भव-सागर से पार उतरने का मार्ग मिल गया। उनका कहना था कि इस पंचतत्व से बने शरीर में जो आत्मा है वही परमात्मा है। उनका यह पंचतत्व से बना शरीर ही संतों का घर है, इसी में हवन, पूजा आदि की सामग्री भी। आत्मा को ही परमात्मा से मिलन का माध्यम है जिसके लिए हमें ज्ञान चेतना की आवश्यकता होगी और भवरूपी सागर से पार उतरने के मार्ग हमें सद्गुरु के माध्यम से ही मिला है। पीपा संत कबीर के समर्थक थे उनका मानना था कि अगर कबीर न होते तो ढोंगी, आडंबर करने वाले लोग सच्ची भक्ति रसातल में भेज देते।

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संत पीपा मांस भक्षण की कठोर निंदा करते थे। उन्होंने समाज के दलित लोगों में जागरुकता फैलाकर उनके उत्थान का कार्य किया। वे जात-पात के भेदभाव के विरोधी थे उनका मानना था। हम सभी एक ईश्वर की संतान है। सभी का मृत्युलोक पर आगमन एक मार्ग से हुआ है तथा सभी एक मार्ग से जाएंगे। ईश्वर सभी को अपनी संतान मानते है।

इस प्रकार के विचारों से युक्त पीपा का योगदान अतुलनीय है।

19 गोपियां श्रीकृष्ण की प्रेम रूपी रसधारा के आस्वादन करने के लिए लालायित हो गई है। उनकी आंखे श्रीकृष्ण के प्रेम रस आस्वादन करने के लालच में श्रीकृष्ण के प्रेम रूपी रसधार में जाकर फँस गयी है, निकलने का भरसक प्रयास करने पर भी निकल नहीं पा रही है क्योंकि वे अब उनकी दासी बन चुकी है।

20 'कल और आज' कविता में नागार्जुन ने ऋतु चक्र का सजीव चित्रण किया है। उन्होंने पहले ग्रीष्म ऋतु की भयानक तपन से प्राकृतिक प्रदेश व मानव समुदाय को पीड़ित बताया है, मानव समुदाय को उदास व निराश बताया है, जीव-जंतु भी हताश व निराश है फिर वर्षा ऋतु का मनोहारी चित्रण किया है कि किस प्रकार वर्षा ऋतु के आगमन पर मानव समुदाय प्रसन्न हो जाता है चारो ओर हरियाली छा जाती है, आसमान में काली घटाएँ छा जाती है आदि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

21 कन्यादान कविता के माध्यम से कवि ऋतुराज की स्त्री जाति के प्रति गहरी संवेदना की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार इस पुरुष प्रधान समाज में रीति रिवाजों व आदर्शों के नाम पर स्त्रियों के लिए नियम गढ़ दिये जाते है जो आदर्श के मुखौटे में बंधन होते है। इस कविता में मां ने अपनी बेटी को इन्हीं बंधनों से बचने की सीख दी है।

22 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' में लेखक ने अद्भुत भाषा शैली 'हास्य व्यंग्यात्मक शैली' का प्रयोग किया है। उन्होंने इस गद्य की भाषा में परिमार्जित भाषा का उपयोग किया है। नवीन व प्राचीन के सामंजस्य बैठाना भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की विशेषता रही है। इसमे भारतेन्दु मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर गद्य को प्रभावशाली बनाया है।

23 गौरा की मृत्यु का कारण हृदय में सुई चुभना था। गौरा को एक ग्वाले, जो उसका दूध दुहने आता था ने गुड़ में रखकर सुई खिला दी जो रक्तसंचार के माध्यम से उसके हृदय तक जा पहुंची जिसके कारण गौरा निरंतर दुबली होती गई और एक दिन उसकी मृत्यु हो गई।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

24 हामिद जब लोहे के सामान वाले की दुकान के आगे से गुजर रहा था तो उसकी नजर वहाँ रखे चिमटे पर पड़ी तब उसने सोचा कि दादी माँ घर पर चूल्हे पर हाथ से रोटी सेंकती है जिससे उनकी अंगुलियाँ जल जाती है। अगर मैं यह ले लूँ तो दादी की अंगुलियाँ भी नही जलेंगी और वो मुझे दुआएँ भी देंगी। यही सोचकर हामिद ने चिमटा खरीदा।

25 दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम सेनापति ने उक्त पंक्ति में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है।

26 'मातृवंदना' कविता मे कवि ने अपने श्रम का श्रेय मातृभूमि या भारतमाता को दिया है।

27 आध्यात्मिक दृष्टि से कन्याकुमारी को सूर्योदय व सूर्यास्त की पावन भूमि कहा जाता है।

28 दादू ने कहा है कि जो परनिंदा करता है, उसके हृदय में श्रीराम का निवास नही होता है।

29 (i) तुलसीदास →

महान कवि तुलसी दास का जन्म 1589 में उत्तर प्रदेश के बाँदापुर जिले मे हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम व माता का नाम हुलसी था। तुलसी दास ब्रज भाषा व अवधी भाषा के कवि थे। ये श्रीराम के भक्त थे। इनकी मृत्यु 1680 में गंगा के तीर पर हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

रचनाएँ → रामचरितमानस, रामलला नहछू, हनुमान बाहुक, रामाज्ञा प्रश्न, वैराग्य संदीपनि जानकी मंगल, पार्वती मंगल आदि।

(ii) मुंशी प्रेमचन्द्र →

इनका जन्म 1880 में वाराणसी के लमही गाँव में हुआ। इनका मूल नाम धनपतराय था। ये उर्दू में नबाबराय के नाम से लिखते थे। ये एक महान उपन्यासकार थे इनको एक महान उपन्यासकार शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय ने उपन्यास सम्राट कहा। इन्होंने 'सोजे वतन' नामक पुस्तक लिखी जिसका मतलब था- देश का दर्द। जिसे ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया। इनकी मृत्यु 1936 में हुई।

रचनाएँ → कर्बला, संग्राम, निर्मला, सोजेवतन आदि।

30

(i) 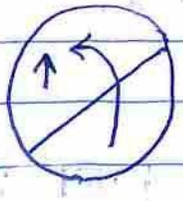 → ओवर टेक करना मना है।

(ii) 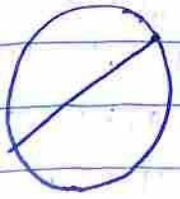 पार्किंग निषेध है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii)

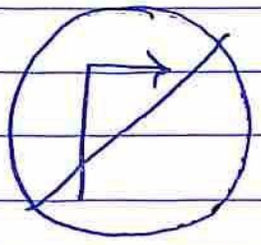

आगे से दाएँ मुड़ना निषेध है।

(iv)

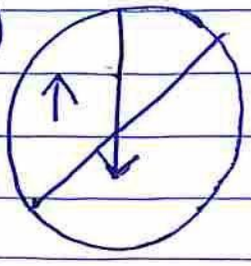

आगे एक लेन वाली सड़क या केवल एक ओर वाहन चालन संभव है।

समाप्त